संघर्षरत हैं मानवती आर्य्या

विभा शुक्ला

भारत में पहली महिला फ़ौज की स्थापना की नेताजी सुभाषचन्द्र बोस ने। नेताजी रानी लक्ष्मीबाई रेज़ीमेन्ट की सभी महिला सैनिकों को रानी कहकर सम्बोधित करते थे। उनका विश्वास था कि भारत की आज़ादी और इसके विकास के लिए महिलाओं में जागरूकता उत्पन्न करना और उन्हें संगठित करना आवश्यक है। नेताजी के इस विश्वास की रक्षा की श्रीमती मानवती आर्य्या ने। मानवती आर्य्या सुभाष चन्द्र बोस की निकट सहयोगी और रानी लक्ष्मीबाई रेज़ीमेन्ट की लेफ़्टिनेंट कमान्डिंग ऑफ़िसर थीं।

मानवती जी का जन्म 30 अक्टूबर 1920 को मैक्टीला (बर्मा) में हुआ था। आपके पिता श्री श्यामता प्रसाद पाण्डेय डाक विभाग में सेवारत थे तथा माता श्रीमती छविरानी एक कुशल गृहणी थी। मानवती जी की शिक्षा बर्मी और अंग्रेजी भाषा में आरम्भ हुई। उन्होंने 1941 में हाईस्कूल पास किया और घर के कामों में मां का हाथ बंटाने लगीं।

मानवती आर्य्या में देशप्रेम कूट-कूट कर भरा था, अतः वह इंडियन इंडिपेन्डेन्स लीग की सक्रिय सदस्य बन गयीं। इस लीग की स्थापना रास बिहारी बोस ने की थी।

श्री रासबिहारी बोस अत्यन्त वृद्ध हो चुके थे तथा उनमें अब इतने बड़े संगठन को सम्हालने की शक्ति नहीं रह गयी थी। सौभाग्य से उसी समय नेताजी सुभाष चन्द्र बोस बर्मा पहुंचे। यहीं मानवती जी को नेताजी सुभाष चन्द्र बोस के निकट आने का अवसर मिला।

सुभाषचन्द्र बोस एक कट्टर राष्ट्रवादी नेता थे। उन्होंने 21 अक्टूबर 1943 को अपनी सरकार की घोषणा कर दी। नेताजी ने पहले अपना मुख्यालय सिंगापुर में बनाया, किन्तु बाद में वह इसे रंगून ले आये। इसी समय नेताजी ने रानी लक्ष्मीबाई रेज़ीमेंट का गठन किया तथा उसका प्रधान बनाया कैप्टन लक्ष्मी स्वामीनाथन को। कैप्टन लक्ष्मी स्वामीनाथन आगे चलकर कैप्टन लक्ष्मी सहगल के नाम से प्रसिद्ध हुईं।

मानवती जी आज़ाद हिन्द फ़ौज में एक सक्रिय भूमिका चाहती थीं, अतः उन्होंने आज़ाद हिन्द फ़ौज को मज़बूत करने के लिए ग्यारह पृष्ठों की एक योजना तैयार की और इसे कैप्टन स्वामीनाथन के माध्यम से नेताजी तक पहुंचा दिया।

नेताजी मानवती जी की इस कार्ययोजना से बहुत प्रभावित हुए तथा उन्होंने मानवती को अपने पास बुलाया। मानवती जी के लिए यह बड़ा रोमांचक समय था। उन्होंने नेताजी के विषय में बहुत कुछ सुना था, किन्तु व्यक्तिगत रूप से पहली बार उनसे मिल रही थीं।

मानवती जी ने 17 जनवरी, 1944 को पहली बार नेताजी सुभाष चन्द बोस से भेंट की। मानवती जी राष्ट्रभक्त और राष्ट्रप्रेमी थीं, अतः वह नेताजी से बहुत प्रभावित हुईं और इस भेंट के बाद उन्होंने अपना सम्पूर्ण जीवन देश को समर्पित करने का निश्चय किया। दूसरी तरफ नेताजी ने भी मानवती की प्रतिभा को पहचाना और उन्हें अपनी सरकार आर जी हुकूमते आज़ाद हिन्द में सचिव का पद दे दिया। मानवती जी ने हुकूमते आज़ाद हिन्द की सचिव का पद तो सम्हाल लिया, किन्तु वह इस पद से संतुष्ट नहीं थीं। वह तो रानी लक्ष्मीबाई रेज़ीमेन्ट की सक्रिय सदस्य बन कर युद्ध के मोर्चे पर काम करना चाहती थीं। नेताजी को जब यह मालूम हुआ तो उन्होंने मानवती जी को आज़ाद हिन्द फौज में ले लिया और उनकी क्षमता को पहचानते हुए शीघ्र ही उन्हें रानी लक्ष्मीबाई रेज़ीमेन्ट का लेफ़्टीनेंट बना दिया।

मानवती जी न अपनी फौज की टुकड़ी के साथ कई बार युद्ध के मोर्चों पर काम किया। उन्हें कहीं सफलता मिली तो कहीं असफलता। अप्रैल 1945 में रानी लक्ष्मीबाई रेजीमेन्ट भंग कर दी गयी। मानवती सुभाष चन्द बोस के साथ बहुत कम समय रहीं, लेकिन जितने दिन भी वह उनके साथ रहीं, वे दिन उनके जीवन के लिए एक यादगार बन गए।

मानवती जी एक कुशल प्राध्यापिका, पत्रकार, समाजसेविका और बाल कवियत्री हैं। बच्चों और बाल साहित्य से उन्हें विशेष लगाव है। मानवती जी ने स्कूल में कभी भी हिन्दी नहीं सीखी, किन्तु वह अपना पूरा काम हिन्दी में करती हैं। हिन्दी का ज्ञान उन्हें अपने पिता से मिला था।

भारत आने के बाद मानवती जी कानपुर नर्सरी स्कूल में प्राचार्य हो गयीं। प्रौढ़ साहित्य तो आपने बर्मा में लिखना आरम्भ कर दिया था, किन्तु शिशु गीतों और बालगीतों की रचना कानपुर आने के बाद की।

मानवती जी ने बच्चों के लिए पानी के गीत, गिनती के गीत; शिशु गीत संग्रह, विटामिन गीत नाटिका, मुन्ना सीखेगा भूगोल, नाते-रिश्ते, नाटक चूहों का, दादी मां की सीख, दादी-अम्मा मुझे बताओ आदि अनेक पुस्तकें लिखीं। सन् 1975 में सीलिंग हाउस स्कूल की प्राचार्या बनने के बाद उनके बाल साहित्य लेखन में रूकावट आयी, लेकिन यहां से रिटायर होने के बाद उनका बाल साहित्य लेखन फिर से चल निकला। वह एक लम्बे समय से 'बाल दर्शन' नाम की मासिक पत्रिका का सम्पादन और प्रकाशन कर रही हैं।

मानवती जी एक साहसी, कर्मठ और संघर्षशील नारी का रूप है। वह भारत की आज़ादी को संपूर्ण आजादी नहीं मानती। उनके अनुसार वास्तविक आज़ादी तो तब होगी, जब भूखे-नंगे बच्चों को विकास के समान अवसर मिलेंगे। औरतों का शोषण बन्द होगा और उन्हें समाज में सम्मानजनक स्थान मिलेगा। □